International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(3): 06-08

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(3): 06-08
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-03-2019
Accepted: 06-04-2019

डॉ. वेदप्रकाश मिश्र
निर्देशक, कला संकायाध्यक्ष
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

मधुमिता ध डामाझी
शोधछात्रा, सेमेस्टर द्वितीय, एम. फिल. संस्कृत, डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. वेदप्रकाश मिश्र
निर्देशक, कला संकायाध्यक्ष
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

श्रीमद्भगवत्गीता में ब्रह्म तत्त्व

डॉ. वेदप्रकाश मिश्र, मधुमिता ध डामाझी

प्रस्तावना

श्रीमद्भगवत्गीता को भारतीय दार्शनिक जगत् में अप्रतिमम् स्थान प्राप्त है। इसे वेदों के समान महत्व दिया गया है। वेदों के समान ही गीता को भी श्रुती माना गया है। इस प्रकार भगवत्गीता का प्रस्थानात्रयी में द्वितीय स्थान है। वेदान्त के सभी आचार्यो ने इस पर अपनी–अपनी दार्शनिक विचारधार के अनुसार टिकाएँ लिखी हैं, जिस प्रकार उपनिषदों और व्यास कृत वेदांत के ब्रह्म सूत्र की व्याख्या शंकर, श्रीरामानुचार्य, निम्बाकाचार्य और श्री वल्लभाचार्य इस पर व्याख्या करते हैं। उसी प्रकार आचार्यों ने श्रीमद्भगवत्गीता की भी व्याख्या अपने सिद्धांत और मत् की प्रमाणिकता और पुष्ट के लिए श्रीमद्भगवत्गीता की भी व्याख्या कर यह बताने का प्रयत्न करते हैं कि उनका मत एवं सिद्धांत न केवल तार्किक और वैज्ञानिक है। अभी वह श्रुति परक और प्रस्थानात्रयी के अनुकूल है। श्रीमद्भगवत्गीता व्यास रचित महाभारत का एक अंश है जो कुरूक्षेत्र के मैदान में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को दिया। जब वह युद्ध क्षेत्र में अपने संबंधियों को देख के युद्ध से विमुख हो के रथ से उतर जाते हैं उसी समय श्रीकृष्ण के द्वारा कथित गीता ज्ञान के उपदेश को सुनकर तथा अर्जुन का मोह नष्ट होता है। वे अपने कर्तव्य में तत्पर होते है और सच्चीदानन्द ब्रह्म स्वरूप श्रीकृष्ण कहते है।

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ।।[1]

गीता में वर्णित ब्रह्म तत्त्व

ब्रह्म शब्द संस्कृत ''बृह'' धातु (अण् प्रत्यय) से होता जिसका अर्थ बढ़ना जो हमेशा वृद्धि को प्राप्त होता है वो ब्रह्म हैं। जिनका कभी क्षय नहीं होता ''नक्षरति इति अक्षरः'' वही अक्षर ब्रह्म है। इसीलिए अक्षर को भी ब्रह्म कहा गया है। वह अनंत असीम और अद्वेय तत्व उसे ही सृष्टि का उत्पत्ति कर्ता, पालन कर्ता और संहार कर्ता कहा गया है। श्रीमद्भगवत्गीता में श्रीकृष्ण अपने को ब्रह्म कहते हैं, ''मेरे से दूसरा कोई बड़ा नहीं है''।

ब्रह्म तत्व की खोज हमे वैदिक काल से प्राप्त होती है। वैदिक संहिताओं में अनेक देवताओं का नाम हमें मिलता है, जैसे अग्नि, वायु, वरूण, कुबेर, यम, मरूत, अश्विनीकुमार इत्यादि। वैदिक ऋषि जिस भी देवता की प्रार्थना और आराधना करते थे उसे ही परम्तत्व सर्वशक्तिमान और प्रकृति का नियन्ता मानते थे परंतु अनेकत्ववाद से उन्हें शान्ति नहीं मिली और वे एक परम्तत्व तथा परम्सत्ता की खोज में आगे बढ़ें। वे स्वयं कहते हैं – ''कस्मैं देवाया अविशाविदीम'' अर्थात् हम किस देवता की पूजा–अर्चना करें, हवन किसे सर्मपित करें। यह एक अद्वैत परम्तत्व की खोज अंत में ब्रह्म में समाप्त होती है।

'एकम् ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' वह परम्तत्व एक ब्रह्म एक है उसके समान दूसरा कोई नहीं है।

उसे ही अनेक नामों से पुकारा जाता है – 'एकम् सत् विप्राह बहुधा वदन्ती'

वेदान्त दर्शन के अनुसार इस जगत के जन्म, स्थिति, प्रलय जिससे होते हैं, वही 'ब्रह्म' है – 'जन्माद्यस्थ यतः'

वशिष्ट गीता में ब्रह्म को परम् शांत रूप और निरामय कहा गया है– 'ब्रह्म शांतम् प्रविष्टोऽस्मि ब्रह्मैवास्मि निरामयः'

''विद्यैव तु निर्धारणात्''[2]

ब्रह्म विद्या ही मुक्ति में कारण है कर्म नहीं अर्थात् उस परब्रह्म परमात्मा को ही मनुष्य जन्म मरण को

लांग जाता है। परम् पद मोक्ष की प्राप्ति के लिए दूसरा कोई मार्ग या उपाय नहीं है।

''दर्शनाच्च''[3]

यज्ञ आदि कर्मों का फल स्वर्ग लोक में जाकर वापस आना है और ब्रह्म ज्ञान का फल जन्म मरण से छूट कर परमात्मा को प्राप्त हो जाना है।

''श्रुत्यादिबलीयस्त्वाच्च न बाधः''[4]

ब्रह्मा विद्याओं का उद्देश्य एकमात्र परब्रह्मा परमात्मा का साक्षात्कार करा देना और इस जीवात्मा को सदा के लिए सब प्रकार के दुःखों से मुक्त कर देना है। ब्रह्म विद्या ही परमात्मा को प्राप्ति और जन्म मरण से छूटने का साधन है सा काम यज्ञ आदि कर्म नहीं।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।।[5]

परब्रह्मा ज्योतियों का भी ज्योति एवं माया से अत्यंत परे है। आकाश में हजार सूर्य की एक साया उदय होने से उत्पन्न जो प्रकाश ही वह भी उस परमात्मा का बराबरी नहीं कर सकता है।

न तद्भसयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।[6]

ईश्वर ने कहा कि जिस परम पद को प्राप्त होकर मनुष्य संसार में लौट कर नहीं आते उस स्वयं प्रकाश रूप परम पद को ना सूर्य प्रकाशित कर सकता है ना चंद्रमा और ना अग्नि ही वही मेरा परम धाम है।
उस जगह को वास्तविक गोलोक धाम कहा गया है यह स्थान 100 करोड़ योजन ऊर्जा नदी के पार है वहां ना सूर्य का प्रकाश है ना चंद्रमा का और ना अग्नि का हो।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं नमो बुद्धिरेव च।
अहकांर इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।[7]
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणित्युपराश्य।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तया।।[8]

पूर्ण ब्रह्म ने अपने आपको 3 अवयव में विभाजित किया
1. जड़ प्रकृति (महा विष्णु)
2. चेतन प्रकृति (गर्वोवकासई विष्णु)
3. आत्मा (अन्तःमन) (परमात्मा, ईश्वर, परिलोंग ईश्वर पुत्र, श्रीरदकोसाई विष्णु)

जड़ प्रकृति (महा विष्णु) कम ऊर्जा से रचना का काम होता है। चेतन प्रकृति (गर्वोदकासाई विष्णु) उच्च ऊर्जा से फंक्शन होता है और अच्छा आत्मा (परमात्मा, ईश्वर, परिलोंग, ईश्वर पुत्र, श्रीरदकोसाई विष्णु) जर्रे–जर्रे में समाया।
अन्तःमन (परमात्मा, ईश्वर, पहिर्लोग, ईश्वर पुत्र, श्रीरदकोसाई विष्णु) ने जड़ प्रकृति (महा विष्णु) कम ऊर्जा और चेतन प्रकृति गर्वोवकासाई विष्णु) उच्च ऊर्जा से सारा जगत रचा।
ब्रह्म एक है परंतु उसके दो स्वरूप किये गये हैं –
(क) सगुण ब्रह्म (साकार), (ख) निर्गुण ब्रह्म (निराकार)
परमात्मा का वह रूप जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है अर्थात् ब्रह्म कर्ता का भाव ग्रहण करता है जैसे सृष्टि कर्ता, पालन कर्ता और संहार कर्ता आदि या जब ब्रह्म के साथ कोई विशेषण लगता है जैसे सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान आदि तब वह सगुण ब्रह्म कहलाते हैं।

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।।[9]

उस सगुण ब्रह्म के शरीर और हाथ, पैर, नेत्र, सिर, मुख और कान है क्योंकि वह संसार में सबकों व्याप्त करके स्थित हैं।
सगुण ब्रह्म का लक्षण बताते हुए छन्दोग्योपनिषत् में कहा गया है कि ब्रह्म मनोमय, प्रकारस्वरूप, सतसंकल्प, आकारशरीर, सर्वकर्मा, सर्वगन्ध तथा सर्वरस आदि है।
ईश्वर अनादि अनन्त है वह, न जन्म लेता है न मरता है, वही निर्गुण ब्रह्म है। ये अव्यक्त है क्योंकि इसमें किसी भी इन्द्रियों विषय नहीं है। यह तत्व अविनाशी और अक्षर है।

विनुपादचलय सुनय विनुकाना
पर विनु कर्म कस्य विधि नाना।।[10]

बिना पैर के चलते है, बिना कान के सुनते, बिना हाथ के अनेक प्रकार के काम करते हैं।

आनन्द रहित सकल रस भोगी
विनुवाणी वक्ता वड़ योगी।।[11]

मुख न होते हुए भी सम्पूर्ण रस का आनन्द लेने वाले वाणी न होते हुए भी बोलने वाले ब्रह्म है।

द्वासुपर्णा सयूजा सखायासामार्नमतत् एकम् पीप्पम् स्वादूअति।
अनस्नत् चान्योत् अविचाकसिती।।[12]

पीपल के वृक्ष में दो पक्षी समान्य मित्र भावों से बैठे हुए हैं। एक पक्षी जो (ब्रह्म) वृक्ष को देखता है और दूसरा (आत्मा) वृक्ष के फल का भक्षण करता है।
ब्रह्म चराचर प्राणीयों के बाहर–भीतर, आगे–पीछे, उत्तर–दक्षिण, ऊॅपर–नीचे सभी जगह अर्थात् पूरी जगत ही ब्रह्ममय है।

ॐ तत्सदिति निर्दिशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।।[13]

श्रीमद्भगवत्गीता में ब्रह्म रूपी इस तत्व के तीन भेद बतलाए गये हैं – ऊँ, तत्, सत्

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशशः श्रेयः
ज्ञान वैराग्ययोः चैव षण्णां भगइतिरणः।[14]

षड् ऐश्वर्यवान परमसत्ता जगत नियंता हिं परम् ब्रह्म है जो इन छः (भग) से युक्त है वही परम् ब्रह्म है।
जब मनुष्य इस तत्व रूपी ब्रह्म को जान लेगा तब उसके मन से संसार के बनाये सारे भेद स्वतः ही मिट जायेगा। जाति, धर्म, भाषा आदि सारे भेद मिट जायेंगे। संसार के मोह माया से ही मुक्त होकर ईश्वर का शरणागत होगा।

निष्कर्ष

गीता मानती है कि ब्रह्म विस्वात्मा है और अन्तर्यामी स्वरूप सर्वत्र स्थित है परन्तु वह विश्व की सीमाओं तथा उसके परिवर्तनों से सर्वथा अलग है। गीता में ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष, निर्विकल्पक और अनिवार्य है परन्तु यह ब्रह्म शून्य नहीं है वो उसकी उपासना, प्रार्थना, स्तुती की जाती है और वह अनुभूति गम्य है। हजार लोगों ने उसका अपरोक्षनुभव किया है। ब्रह्म को प्राप्त करने से ही शांति और मोक्ष की प्राप्ति तथा जन्म, बंधन, स्वर्ग, नरक आदि से मुक्ति मिलती है। गीता में इस परम तत्व ब्रह्म की प्राप्ति को ही सर्वोच्च

ज्ञान और सर्वोच्च प्राप्ति माना गया है। इसकी प्राप्ति से बड़ा लाभ कोई नहीं है। यह ब्रह्म ही श्रीकृष्ण है। कृष्ण गीता में कहते हैं –

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिंद्ध परमां गताः।।[15]

संदर्भ सूची

1. श्रीमद्भगवत्गीता 18/73
2. श्रीमद्भगवत्गीता 13/13
3. श्रामचरितमानस बालकाण्ड
4. श्रीमद्भगवत्गीता 17/23
5. वेदांत दर्शन, पाठ–3, अध्याय–3, श्लोक–47,
6. वेदांत दर्शन, पाठ–3, अध्याय–3, श्लोक–48,
7. वेदांत दर्शन, पाठ–3, अध्याय–3, श्लोक–49
8. गीता 13/17
9. गीता 15/6
10. श्री गर्ग संहिता, अध्याय–2
11. गीता 4/6–6
12. गीता 4/6–6
13. श्रीमद्भगवत्गीता 8/15